



16. अद्भुतं युद्धम्



महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण आदिकाव्य के रूप में प्रसिद्ध है। रामायण को आदिकाव्य कहा जाता है अतः उसके रचयिता महर्षि वाल्मीकि आदिकवि हैं। रामायण में कुल सात कांड और चौबीस हजार श्लोक हैं। रामायण की कथावस्तु सुप्रसिद्ध है। कथा के अनुसार राजा दशरथ राम को अयोध्या की राजगद्दी देना चाहते थे। परन्तु कैकेयी के वचन के अनुसार राम को जंगल में जाना पड़ा। सीता और लक्ष्मण ने भी राम के साथ वन-गमन किया। जंगल में घूमते-घूमते राम दंडकारण्य के पंचवटी क्षेत्र में पहुँचे। जहाँ वे पर्णकुटीर बनाकर सुखपूर्वक निवास करने लगे। इस समय के दौरान जो घटना घटी, उसका वर्णन रामायण के चौथे काण्ड अरण्यकांड में है। इस पाठ में प्रस्तुत पद्य उसी कांड से लिए गए हैं।

इसी निवास स्थान से रावण ने सीता का हरण किया था। सीता को बलपूर्वक ले जाते समय रावण को मार्ग में गिद्धराज जटायु मिलते हैं। सीता गिद्धराज जटायु से मदद के लिए निवेदन करती हैं। रावण खूब शक्तिशाली था। उसके पास धनुष, बाण, रथ इत्यादि अनेक साधन थे, जबकि जटायु के पास अपने शारीरिक अंगों जैसे – चोंच, पंख तथा नाखून के अतिरिक्त और कोई आयुध नहीं था। अपनी सीमित और रावण की असीमित शक्ति को जानते हुए भी जटायु ने रावण को ललकारा और उन्हें रोकने का भरपूर प्रयास किया। दुर्भाग्यवश जटायु को सफलता नहीं मिली, फिर भी जटायु के इस प्रयास ने, रामायण की कथा में इस पात्र को अमर कर दिया।

जटायु पक्षी होते हुए भी रावण के साथ युद्ध करता है क्योंकि एक दुःखी नारी को, प्राण देकर भी बचाना अपना कर्तव्य समझता है। जटायु द्वारा किए गए संघर्ष को देख थोड़ी देर के लिए रावण भी हतप्रभ रह जाता है। इस प्रसंग का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत काव्यांश में किया गया है। इस काव्यांश में से यह सीख लेनी चाहिए कि अत्याचारी चाहे जितना समर्थ हो, हम चाहे जितने निर्बल हों फिर भी अपनी तथा पीड़ितों की रक्षा करने के लिए पूरी शक्ति से अत्याचारी का सामना करना चाहिए। दुःखी व्यक्तियों के दुःख दूर करना अपना मानव-धर्म समझना चाहिए।

ततः पर्वतशृङ्गाभः तीक्ष्णतुण्डः खगोत्तमः।

वनस्पतिगतः श्रीमान् व्याजहार शुभां गिराम् ॥ 1 ॥

यत् कृत्वा न भवेद् धर्मो न कीर्तिः न यशो ध्रुवम्।

शरीरस्य च भवेत् खेदः कस्तत् कर्म समाचरेत् ॥ 2 ॥

निवर्तय गतिं नीचां परदाराभिमर्शनात्।

न तत् समाचरेत् धीरो यत्परोऽस्य विगर्हयेत् ॥ 3 ॥

वृद्धोऽहं त्वं युवा धन्वी सरथः कवची शरी।

न चाप्यादाय कुशली वैदेहीं मे गमिष्यसि ॥ 4 ॥

इत्युक्तः क्रोधताम्राक्षः तप्तकाञ्चनकुण्डलः।

राक्षसेन्द्रोऽभिदुद्राव पतगेन्द्रम् अमर्षणः ॥ 5 ॥

तद् बभूवाद्भुतं युद्धं गृध्रराक्षसयोस्तदा।

सपक्षयोर्माल्यवतोः महापर्वतयोरिव ॥ 6 ॥



विददार नखैरस्य तुण्डं पृष्ठे समर्पयन् ।
केशांश्चोत्पाटयामास नखपक्षमुखायुधः ॥ 7 ॥

ततोऽस्य सशरं चापं मुक्तामणिविभूषितम् ।
चरणाभ्यां महातेजा बभञ्ज पतगोत्तमः ॥ 8 ॥

स भग्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः ।
हस्तेनादाय वैदेहीं पपात भुवि रावणः ॥ 9 ॥

जटायुस्तमतिक्रम्य तुण्डेनास्य खगाधिपः ।
वामबाहून् दश तदा व्यपाहरत् अरिन्दमः ॥ 10 ॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिङ्ग) खेदः दुःख, निराशा **धीरः** धैर्यवान्, गम्भीर **पतगोत्तमः** पक्षियों में उत्तम **जटायुः** इस नाम का रामायण का एक प्रसिद्ध पात्र, पक्षीराज **चापम्** धनुष्य **वामबाहुः** बाईं भुजा **अरिन्दमः** शत्रु का दमन करने वाला

(स्त्रीलिङ्ग) गिरा वाणी **वैदेही** सीता विदेहराज की पुत्री

(नपुंसकलिङ्ग) तुण्डम् मुख, चोंच **पृष्ठम्** पीठ

सर्वनाम : परः अन्य, दूसरा

विशेषण : पर्वतशृङ्गाभः तीक्ष्णतुण्डः खगोत्तमः वनस्पतिगतः श्रीमान् महातेजाः पतगोत्तमः (जटायुः) पर्वत के शिखर के समान आभा से युक्त, तीक्ष्ण अर्थात् नुकीले चोंचवाले, खग अर्थात् पक्षियों में उत्तम, वनस्पति में रहने वाले - वनस्पति को प्राप्त हुए, शोभा से युक्त, महान तेजवाला, महातेजस्वी - पतग अर्थात् पक्षियों में उत्तम ऐसा जटायु **शुभाम् (गिराम्)** शुभ कल्याणकारी वाणी (से) को **नीचाम् (मतिम्)** नीच (बुद्धि विचार) को **त्वं धन्वी (युवा)** तुम धनुषधारी (युवक) **सरथः कवची शरी (रावणः)** रथवाला, कवचवाला, बाणवाला (रावण) **कुशली** कुशल, सकुशल **वैदेहीम्** वैदेही, सीता को **क्रोधताम्राक्षः तप्तकाञ्चनकुण्डलः राक्षसेन्द्रः अमर्षणः (रावणः)** क्रोध के कारण तांबे जैसी (लाल) आँखों वाला, तपे हुए सोने के समान कुंडलवाला, राक्षसों का राजा, क्रोधी (रावण) **सपक्षयोः महापर्वतयोः (माल्यवतोः)** पंखों वाले महान पर्वत (दो माल्यवान् पर्वतों का) **नखपक्षमुखायुधः (जटायुः)** नाखून, पंख और मुख (चोंच) रूपी आयुध - हथियारवाला (जटायु) **मुक्तामणिविभूषितम् सशरम् (चापम्)** मुक्ता नामक मणि से सुशोभित बाण के साथ वाले धनुष को **भग्नधन्वा विरथः हताश्वः हतसारथिः (रावणः)** टूटे हुए धनुषवाला, रथ बिना का - रथ विहीन, मारे गए घोड़ेवाला, मृत सारथीवाला (रावण) **खगाधिपः अरिन्दमः (जटायुः)** पक्षीराज, शत्रु का दमन करने वाला (जटायु)

अव्यय : महुर्मुहुः बार-बार **आशु** जल्दी, शीघ्र

समास : पर्वतशृङ्गाभः (पर्वतस्य शृङ्गम् पर्वतशृङ्गम् (षष्ठी तत्पुरुष), पर्वतशृङ्गस्य आभा इव आभा यस्य सः - (बहुव्रीहि) । तीक्ष्णतुण्डः (तीक्ष्णं तुण्डं यस्य सः - बहुव्रीहि) । खगोत्तमः (खगेषु उत्तमः - सप्तमी तत्पुरुष) । वनस्पतिगतः (वनस्पतिं गतः - द्वितीया तत्पुरुष) । परदाराभिमर्शनात् (परस्य दाराः, परदाराः (षष्ठी तत्पुरुष), परदाराणाम् अभिमर्शनम्, तस्मात् - षष्ठी तत्पुरुष) । सरथः (रथेन सहितः - बहुव्रीहि) । नखपक्षमुखायुधः (नखाः च पक्षौ च मुखं च (नखपक्षमुखानि - इतरेतर द्वन्द्व), नखपक्षमुखानि आयुधानि यस्य सः - बहुव्रीहि) । सशरः (शरेण सहितः - बहुव्रीहि) । मुक्तामणिविभूषितम् (मुक्ता चासौ मणिः (मुक्तामणिः - कर्मधारय), मुक्तामणिना विभूषितः, तम् - तृतीया तत्पुरुष) । महातेजाः (महत् तेजः यस्य सः - बहुव्रीहि) । पतगोत्तमः (पतगेषु उत्तमः - षष्ठी तत्पुरुष) । भग्नधन्वा (भग्नं धनुः यस्य सः - बहुव्रीहि) । हताश्वः (हताः अश्वाः यस्य सः - बहुव्रीहि) । हतसारथिः (हतः सारथिः यस्य सः - बहुव्रीहि) । गृध्राजेन (गृध्राणां राजा, तेन - षष्ठी तत्पुरुष) । क्रोधमूर्छितः (क्रोधेन मूर्छितः - तृतीया तत्पुरुष) । खगाधिपः (खगानाम् अधिपः - षष्ठी तत्पुरुष) । वामबाहून् (वामः च असौ बाहुः च, तान् - कर्मधारय) ।

कृदन्त : (सं. भू. कृ.) कृत्वा करके **आदाय** ले करके **अतिक्रम्य** अतिक्रमण करके, हृद के बाहर जाकर

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपदी) पत् (पतति) पड़ना, नीचे गिरना

दसवाँ गण (परस्मैपदी) वि + गर्ह् (विगर्हयति) निन्दा करना

विशेष

1. शब्दार्थ : व्याजहार बोला न भवेद् धर्मः धर्म नहीं होता न कीर्तिः न कीर्ति होती न यशो ध्रुवम् स्थिर रहनेवाला यश नहीं होगा शरीरस्य च भवेत् खेदः और शरीर को दुःख हो कस्तत् कौन वह समाचरेत् आचरण करता है परदाराभिमर्शनात् परस्त्री का स्पर्श करने से होने वाली नीचा निम्न, नीच गतिम् गति को (प्राप्त करने से) निवर्तय अटक जा, रुक जा यत्परः अस्य विगर्हयेत् अन्य व्यक्ति जिसकी निन्दा करें इत्युक्तः इस तरह कहा गया, ऐसा कहा (तब) अमर्षणः राक्षसेन्द्रः क्रोधित राक्षस राज (रावण) अभिदुद्राव पतगेन्द्रम् पतगेन्द्र-पक्षीराज जटायु की ओर दौड़े तद् बभूव अद्भुतम् युद्धम् तदुपरान्त अद्भुत युद्ध हुआ गृध्राक्षसयोः गिद्ध-जटायु और राक्षस-रावण का विददार नखैः नाखून से खरोँचा, चोट पहुँचाई तुण्डं पृष्ठे समर्पयन् चोंच को पीठ के ऊपर रखकर- मारते हुए केशान् च उत्पाटयामास बाल को उखाड़ दिया चरणाभ्याम् दो पैरों से बभञ्ज तोड़ दिया हस्तेनादाय हाथ से लेकर वैदेहीम् वैदेही को, सीता को पपात भुवि रावणः रावण जमीन पर गिर गया दश वामबाहून् दाहिने तरफ की दस बाहुओं को व्यपाहरत् उखाड़ दिया

2. सन्धि : धर्मो न (धर्मः न) । यशो ध्रुवम् (यशः ध्रुवम्) । कस्तत् (कः तत्) । धीरो यत्परोऽस्य (धीरः यत्परः अस्य) । वृद्धोऽहम् (वृद्धः अहम्) । चाप्यादाय (च अपि आदाय) । इत्युक्तः (इति उक्तः) । राक्षसेन्द्रोऽभिदुद्राव (राक्षसेन्द्रः अभिदुद्राव) । बभूवाद्भुतम् (बभूव अद्भुतम्) । गृध्राक्षसयोस्तदा (गृध्राक्षसयोः तदा) । सपक्षयोर्माल्यवतोः (सपक्षयोः माल्यवतोः) । महापर्वतयोरिव (महापर्वतयोः इव) । नखैरस्य (नखैः अस्य) । केशांश्चोत्पाटयामास (केशान् च उत्पाटयामास) । ततोऽस्य (ततः अस्य) । महातेजा बभञ्ज (महातेजाः बभञ्ज) । स भग्नधन्वा (सः भग्नधन्वा) । विरथो हताश्वो हतसारथिः (विरथः हताश्वः हतसारथिः) । हस्तेनादाय (हस्तेन आदाय) । जटायुस्तमतिक्रम्य (जटायुः तम् अतिक्रम्य) । तुण्डेनास्य (तुण्डेन अस्य) ।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

- (1) सीतायाः अपनयनकाले जटायुः कुत्र आसीत् ? ☐
- (क) वनस्पतिम् (ख) पर्वतशृङ्गम् (ग) रथम् (घ) समीपम्
- (2) जटायुः रावणस्य कस्मिन् गात्रे तुण्डं समर्पयत् ? ☐
- (क) नेत्रे (ख) चरणे (ग) मुखे (घ) पृष्ठे
- (3) क्रोधमूर्च्छितः रावणः जटायुं कथम् अभिजघान ? ☐
- (क) तलेन (ख) हस्तेन (ग) बाणेन (घ) खड्गेन
- (4) जटायुः तुण्डप्रहारेण किं व्यपाहरत् ? ☐
- (क) दश मस्तकानि (ख) दश मुखानि (ग) दश दक्षिणबाहून् (घ) दश वामबाहून्
- (5) जटायुः वदति - परदाराभिमर्शनात् नीचां गतिं । ☐
- (क) निवर्तय (ख) निवर्तते (ग) निवर्तयन्तु (घ) निवृत्तिः
- (6) किं विशेषणं जटायोः पक्षिराजत्वं सूचयति ? ☐
- (क) तीक्ष्णतुण्डः (ख) अरिन्दमः (ग) महाबलः (घ) खगाधिपः

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषयाम् उत्तरत ।

- (1) श्रीमान् जटायुः कीदृशीं गिरां व्याजहार ?
- (2) जटायुरावणयोः कः वृद्धः, कः च युवा ?
- (3) रावणस्य चापं कीदृशम् आसीत् ?
- (4) भग्नधन्वा रावणः कुत्र पतितः ?
- (5) जटायुः रावणस्य किम् उत्पाटयामास ?

3. समासप्रकारं लिखत ।

- | | | | |
|---------------|-------|---------------------|-------|
| (1) खगोत्तमः | | (2) तीक्ष्णतुण्डः | |
| (3) भग्नधन्वा | | (4) हतसारथिः | |
| (5) वामबाहून् | | (6) क्रोधमूर्च्छितः | |

4. उदाहरणानुसारम् अनुस्वारस्य स्थाने परसवर्णम् अनुनासिकं वा लिखत ।

उदाहरणम् : पर्वतशृङ्गः पर्वतशृङ्गः

- (1) तीक्ष्णतुण्डः
- (2) बभञ्ज
- (3) अरिन्दमः

5. वचनानुसारं शब्दरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

- | | | | |
|-----|----------|-------|----------|
| (1) | | | निवर्तयत |
| (2) | समाचरेत् | | |
| (3) | गमिष्यसि | | गमिष्यथ |

6. रेखाङ्कितानां पदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(काम्, कुत्र, कीदृशीम्, कः, केन, कीदृशः)

- (1) जटायुः शुभां गिरां व्याजहार ।
- (2) विरथः रावणः भुवि पपात ।
- (3) जटायुः तस्य पृष्ठे तुण्डं समर्पयत् ।
- (4) रावणः वैदेहीम् आदाय गच्छति ।
- (5) जटायुः तुण्डेन तस्य दश वामबाहून् व्यपाहरत् ।

7. मातृभाषया उत्तराणि लिखत ।

- (1) वृद्ध जटायु रावण को किन शब्दों में ललकारता है ?
- (2) जटायु के पास कौन-कौन से आयुध हैं ?
- (3) रावण किस तरह धरती पर गिरा ?
- (4) क्रुद्ध मूर्छित रावण ने क्या किया ?
- (5) अन्त में जटायु ने क्या किया ?

8. निम्नलिखित विशेषणों में से रावण और जटायु के विशेषणों को अलग कीजिए ।

कवची, श्रीमान्, अरिन्दमः, भग्नधन्वा, धन्वी, पर्वतशृङ्गाभः, युवा, पतगोत्तमः, विरथः, क्रोधमूर्च्छितः, वृद्धः, तीक्ष्णतुण्डः, महातेजाः।

प्रवृत्ति

- जटायु के समान अन्य परोपकारी पशु-पक्षियों की कथाओं का संग्रह कीजिए।
- रामायण के जटायु वध प्रसंग के समान अन्य प्रसंगों की चित्र प्रदर्शनी लगाइए।

●